जैन धर्म में आगमों का अध्ययन अति आवश्यक : सन्मतिमुनिजी

हैदराबाद, 29 जुलाई-(मिलाप ब्यूरो) श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमणोपासक संघ, हैदराबाद के तत्वावधान में श्रमणसंघीय आचार्य प्रवर शिवमुनिजी म.सा., युवाचार्य मिश्रीलालजी म.सा. 'मधुकर' के शिष्य सलाहकार उप-प्रवर्तक विनयमुनिजी 'भीम' म.सा., पूज्य निरंजन मुनिजी म.सा., पूज्य सन्मति मुनिजी म.सा. 'साहिल' की पावन निश्रा में कन्दास्वामी लेन, रामकोट स्थित गुरु गणेश जैन भवन के गुरु गणेश आनंद मधुकर दरबार में चातुर्मास प्रवचन श्रृंखला के अंतर्गत धर्मसभा को संबोधित करते हुए दक्षिण केसरी तपाचार्य श्री सन्मतिमुनिजी म.सा. ने कहा कि आत्मोत्थान तथा शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए जिनवाणी का रसास्वादन किया जा रहा है।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति में जे. पारसमलजी कटारिया ने बताया कि म.सा. ने प्रवचन श्रृंखला में कहा कि जैन धर्म के अंतर्गत स्थानकवासी समाज में 32, दिगम्बरों में 84 तथा मूर्तिपूजक संघ में 45 आगमों का उल्लेख मिलता है। इन आगमों का अध्ययन करना अतिआवश्यक है। महावीर ने हमें यह उपदेश दिया था। महावीर अनेकान्तवाद के पुजारी थे। उन्होंने साधु-साध्वी, श्रावक व श्राविका इस चतुर्विध संघ की स्थापना की थी। आगम हमारे प्रेरणा स्त्रोत माने जाते हैं। आगम केवल जैन सिद्धांत में ही मिलते हैं। आप सभी बड़े सौभाग्यशाली हैं जो संतों के मुख से आगम सुनने को मिल रहा है। 32 आगमों का स्वाध्याय साधु करता है। समाधान के लिए साधु स्वाध्याय किया करता है। इन आगमों को पढ़ा जा सकता है, पर जीवन में उतारना मुश्किल है।

स्वाध्याय और अध्ययन में अंतर बताते हुए म.सा. ने कहा कि स्वयं के अंदर आत्मा में रमण करना स्वाध्याय है, बल्कि जो सिर्फ पढ़ा जाता है, जीवन में नहीं उतारता वह अध्ययन है। हमें त्याग तप से सहित होकर रागद्वेष को दूर करने के लिए स्वाध्याय करना चाहिए। उप-प्रवर्तक सलाहकार श्री विनयमुनिजी म.सा. ने मधुकर दरबार में धर्म सभा में कहा, हम आत्म कल्याण की भावना से कर्म मूल को आधार बनाकर सूत्र वाचना, आगम का विवेचन, स्वाध्याय, अनुशीलन व परिशीलन अपने ज्ञान के आधार पर सुनाने व सुनने का प्रयास कर रहे हैं। वीतराग भगवान के वचनों का आगम के माध्यम से रसपान कर रहे हैं। चातुर्मास काल में अपनी बुद्धि के अनुसार आगम की चर्चा हर साधु के माध्यम से की जाती है। सुखविपाक सूत्र नामक आगम की चर्चा म.सा. ने की। आगम का विवेचन करते हुए म.सा. ने कहा कि जिसके आने के बाद गलत धारणा में मनुष्य नहीं उलझता उसका नाम आगम है। हमें अपनी आत्मा को विनय गुण के अंदर प्रस्थापित कर देना चाहिए। साधु जितना ज्ञानवान, साधक होता है, उतना ही विनयवान। परन्तु श्रावकों में आज विनय के स्थान पर अधिकाधिक पैसे व ज्ञान के कारण अभिमान आ जाता है। संघ के महामंत्री हर्ष कुमार मुणोत ने प्रतिदिन के कार्यक्रम की सूचना देते हुए कहा कि तेले की कड़ी एवं आयम्बिल की कड़ी चल रही है। 11 घंटे का सर्वशांति जाप आज श्री जवाहरमलजी सतेन्द्रजी सिंघवी कंदास्वामी बाग वालों की तरफ से है। रविवार 1 अगस्त को एकासना दिवस पर लक्की ड्रा द्वारा 5 पुरस्कार प्रदान किये जाएँगे। 8 अगस्त को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमणोपासक युवती मंडल द्वारा जैन अंत्याक्षरी का कार्यक्रम रखा गया है।

श्री रामदेव बाबा का विशाल जागरण कल

हैदराबाद, 29 जुलाई-(मिलाप ब्यूरो) श्री लाल बाज़ार नवयुवक मित्र मंडल द्वारा आगामी शनिवार, 31 जुलाई को रात्रि 10.01 बजे से श्री रामदेव बाबा का विशाल जागरण (जम्मा) आयोजित किया जाएगा। आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, आर्य वैश्य युवजन संघम (लाल बाज़ार, सिकन्दराबाद बस स्टॉप के सामने) में श्री रामदेव भक्त समिति (भाग्यनगर) द्वारा प्रस्तुत इस जागरण के प्रमुख भजन गायक सुशील बजाज होंगे। सभी भक्तों से कार्यक्रम में भाग लेने का अनुरोध किया गया है। अधिक जानकारी के लिए फोन नं. 924636 8270, 98490 03482 एवं 98491 61608 पर संपर्क किया जा सकता है।

आंध्रा बैंक के वित्ती परिणामों की घोषणा करते हुए बैंक के चेयरमैन एवं प्रबंध-निदेशक आर.एस. रेड्डी। (फोटो : स्टाइल)

आंध्रा बैंक के शुद्ध मुनाफे में 25 प्रतिशत की वृद्धि

हैदराबाद, 29 जुलाई-(मिलाप ब्यूरो) आंध्रा बैंक को जून में समाप्त तिमाही के दौरान 320.41 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ, जो गत वर्ष के मुकाबले 25.05 प्रतिशत अधिक है। बैंक के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक आर.एस. रेड्डी ने एक विज्ञप्ति में बताया कि आलोच्य तिमाही के दौरान कंपनी ने कुल 1,31,844 करोड़ रुपये का कारोबार किया, जो कि गत वर्ष के मुकाबले 24.59 प्रतिशत अधिक है। गत वर्ष यह आंकड़ा 1,05,822 करोड़ था। इस दौरान बैंक की आय गत वर्ष की 1,742.70 करोड़ के मुकाबले बढ़कर 2,073.23 करोड़ रुपये हो गयी। आलोच्य तिमाही के दौरान बैंक का संचालन लाभ पिछले साल की इसी अवधि के 348 करोड़ रुपये से बढ़कर 510.40 करोड़ रुपये हो गयी। इसमें 46.67 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज हुई। रेड्डी ने कहा कि इस दौरान बैंक के कर्ज अनुपात में भी सुधार हुआ और यह गत वर्ष के 74.04 प्रतिशत से बढ़कर 76.86 प्रतिशत हो गया। बैंक की शुद्ध ब्याज आय का आँकड़ा 441.37 करोड़ से 66.81 प्रतिशत बढ़कर 736.25 करोड़ तक जा पहुँची। बैंक के जमा 22.64 प्रतिशत बढ़ गए, पिछले वर्ष का 60,911 करोड़ का यह आँकड़ा इस वर्ष 74,700 करोड़ हो गया।

श्रुत ज्ञान मोक्ष भावना को जगाता है : गौतममुनि

हैदराबाद, 29 जुलाई-(मिलाप ब्यूरो) 'भगवान महावीर ने कहा है कि ज्ञान 5 प्रकार के हैं और उनमें श्रेष्ठ ज्ञान श्रुत ज्ञान को माना गया है। सुनना बहुत बड़ी पुनवाणी है। हमें प्राप्त पंचेन्द्रियों में एक इन्द्री है श्रोत इन्द्री। इसके द्वारा हम शब्दों को सुनते हैं। इसके तीन क्षेत्र हैं। पहला जीव शब्द, दूसरा अजीव शब्द तथा तीसरा मिश्र शब्द। आपसी वार्तालाप, प्रवचन आदि सुनना जीव शब्द है, किसी जड़ वस्तु के गिरने या टकराने से उत्पन्न होने वाला अजीव सत्य तथा मृदंग आदि का बजाना मिश्र शब्द हैं।'

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, ग्रेटर हैदराबाद द्वारा आयोजित श्री पूनमचन्द गांधी जैन स्थानक, काचीगुड़ा में हो रहे चातुर्मास में विराजित उप-प्रवर्तक, गौतम मुनि म.सा. अपने उक्त विचार आत्म-जिज्ञासुओं को सम्बोधित करे हुए प्रकट किये। यह जानकारी चातुर्मास प्रचारक एवं उपाध्यक्ष प्रकाशचन्द लोढा ने अपनी प्रेस विज्ञप्ति में दी। गुरुवर ने कहा कि चेतना वाला शब्द जीव शब्द कहलाता है, जिसे कोई जीवन बोलता है और उद्देश्य भावना को प्रकट करता है।

मुनिवर ने कहा कि बिना श्रुत ज्ञान के केवल्य ज्ञान की महिमा नहीं। श्रुत ज्ञान दो प्रकार से होता है। एक प्रखर बुद्धि, जो एक बार सुनने से ज्ञान प्राप्त कर ले। जो बार-बार सुनकर भी न पा सके, उसे मंद बुद्धि कहा गया है, पर दोनों श्रुत ज्ञान हैं। ज्ञान अतीत की स्मृति और वर्तमान की जानकारी मतिज्ञान कहलाते हैं। मति ज्ञान सुनकर जोर लगाने पर अतीत का ज्ञान उत्पन्न हो जाता है। इसे श्रुत ज्ञान का बीज कहा गया है। श्रुत ज्ञान से जीव में मोक्ष में जाने की भावना जागृत होती है। तीर्थंकर की वाणी सुनकर आत्म निरीक्षण करना चाहिए, यह जिनवाणी का लक्ष्य है, जिसे श्रुत ज्ञान से प्राप्त करते हैं। यह ज्ञान तारण हार है, मंगलकारी है तथा जीवों का उपकारी है। श्रुत ज्ञान प्रखर बुद्धि है।

म.सा. ने कहा कि सर्वप्रथम हमें अपनी संस्कृति को समझना है और उसका पालन करना है। उन्होंने ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि आज संस्कृति को तोड़-मरोड़ रहे हैं, इस पर सभी ध्यान दें, संस्कृति विकृत नहीं होनी चाहिए, उसे उसी के रूप में रखो। यदि आप संतों का संग करते हैं तो आपको अपने इस लक्ष्य को पाने में सहायता मिलेगी। कार्यक्रम के प्रारंभ में सेवाभावी पूज्य वैभव मुनि म.सा. ने भगवती सूत्र में स्वप्न के बारे में विस्तार से बताया गया है। स्वप्न हमें भावी घटना की जानकारी देते हैं। सु-स्वप्न के बाद सोना नहीं चाहिए, उठकर धर्म ध्यान में लग जाना चाहिए, नहीं तो वह फलित नहीं होता है। स्वप्न की जानकारी स्वप्न जानकारों को ही दी जानी चाहिए। सुस्वप्न बताना चाहिए। 72 कलाओं में स्वप्न की विस्तृत जानकारी भी दी जाती थी। आज की धर्म सभा का संचालन सह-मंत्री सज्जनराज गांधी ने किया और भावी कार्यक्रमों की जानकारी दी।

सावन की सैल 8 को

हैदराबाद, 29 जुलाई-(मिलाप ब्यूरो) अग्रवाल समाज, सिकन्दराबाद (उत्तरांचल) शाखा की सावन की सैल आगामी 8 अगस्त को श्रीनिधि रिसॉर्ट (घटकेसर) में आयोजित होगी। शाखा की कार्यकारिणी की बैठक शाखा कार्यालय सोनी भवन (एस.डी. रोड) में अध्यक्ष अरुण तुलस्यान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें उक्त निर्णय लिया गया। कार्यक्रम स्थल के बस अग्रसेन भवन से सुबह 8 बजे रवाना होगी। सैल में विभिन्न खेलों के अलावा महिला प्रकोष्ठ द्वारा महिलाओं और बालिकाओं के लिए तीज सिंझारा कार्यक्रम भी आयोजित होगा। पंजीकरण की अंतिम तिथि 5 अगस्त है। अधिक जानकारी के लिए नवीन तुलस्यान (9849050007) एवं मंत्री संजय सर्राफ (9985413075) से सम्पर्क करें।

श्री गोपाल बजाज मित्र मंडल द्वारा नरनारायण मंदिर जालना में गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में श्री रामदेव भक्त समिति के तत्वावधान में भजन प्रस्तुत करते हुए सुशील बजाज व श्याम सुन्दर गिलडा।

कर्म से महान बनता है मनुष्य : डॉ. पद्ममुनिजी

हैदराबाद, 29 जुलाई-(मिलाप ब्यूरो) 'मनुष्य यदि क्लेश करेगा, झगड़ा करेगा, तो लक्ष्मी का नाश हो जाएगा। फिर चाहे वह लौकिक लक्ष्मी हो या मोक्ष रूपी लोकोत्तर लक्ष्मी। क्लेश से उसका ह्रास हो जाएगा।'

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, सिकन्दराबाद के तत्वावधान में जयगच्छीय उपाध्याय प्रवर पार्श्वचन्द्रजी महाराज के सान्निध्य में आयोजित चातुर्मासिक धर्मसभा में श्रावक-श्राविकाओं को आचार्य सम्राट श्री जयमलजी म.सा. द्वारा रचित काव्य रचना 'क्षमा धर्म' की तीसरी कड़ी के बारे में बताते हुए प्रवचन प्रभावक बारह व्रतों के प्रबल प्रेरक डॉ. पद्मचन्दजी महाराज ने उक्त उदगार व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि क्लेश के कारण बचपन में एक-दूसरे के लिए प्राण तक देने को तैयार रहने वाले भाई-भाई में टकराव हो जाता है। हर घर में आजकल हालात अच्छे नहीं है। लड़कियों को माँ के द्वारा माइंड में यह गलत ढंग से बैठाया जाता है कि एक दिन तुझे पराये घर जाना है। फिर वह शादी के बाद ससुराल को अपना घर मानने के लिए तैयार ही नहीं होती। अपने विचारों के कारण गलत प्रभाव पड़ जाता है। परिवार के बड़े ही नकारात्मक ऊर्जा फैलाते हैं। फिर वह घर, घर नहीं रहता। बेटा पिता से कहेगा कि अब आपकी उम्र हो गयी है, आपका घर में कोई काम नहीं है और भेज देते हैं, उन्हें वृद्धाश्रम।

उन्होंने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर जो मंडरा रहा है, उसे निवारणार्थ आचार और विचार की शुद्धि पर बल दिया गया। पूज्यश्री ने कहा कि तीर्थंकर प्रभु महावीर जन्म से तो महावीर नहीं थे, जन्म से तो वे वर्धमान थे। कर्म ऐसे किये कि देवताओं ने 'महावीर' नाम रखा। जन्म से कोई शूद्र नहीं होता, जन्म से कोई ब्राह्मण भी नहीं होता। अगर कोई व्यक्ति जन्म से शूद्र है, लेकिन यदि उसके कर्म क्षत्रिय के हैं, तो वह क्षत्रिय ही कहलाएगा। महावीर स्वामी के समय कोई अलग जैन संप्रदाय नहीं था। 'जन' और 'जैन' इन दो शब्दों के अंतर को स्पष्ट करते हुए डॉ. पद्ममुनि ने कहा कि 'जन' (मनुष्य) के ऊपर जब आचार और विचार रूपी सद्गुणों की दो मात्राएँ लग जाती हैं, तो वह व्यक्ति यानि जन 'जैन' बन जाता है। शुद्ध आचार-विचारों वाला प्रत्येक व्यक्ति जैन है। हमारे पूर्वाचार्य हजारों, लाखों अजैन लोगों को जैन बनाते आये हैं, यान उन्हें सत्मार्ग पर ले आये हैं।

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराने के इच्छुक कलाकार मोहम्मद सईद थर्माकोल से बनायी गयी अपनी कलाकृतियों के साथ। (फोटो : मिलाप)

मो. सईद की कलाकृतियाँ जीवन्त

हैदराबाद, 29 जुलाई-(मिलाप ब्यूरो) मो. सईद ने अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए थर्माकॉल का उपयोग कर 40 कलाकृतियों को तराश कर उन्हें जीवंतरूप प्रदान किया।

आज यहाँ आयोजित संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए मो. सईद ने थर्माकॉल से बनाई गई विभिन्न कलाकृतियों का प्रदर्शन किया। उन्होंने बताया कि इन कलाकृतियों को तैयार करने में उन्हें डेढ़ वर्ष का समय लगा। इन्हें तैयार करने के लिए उन्हीं के बच्चों से प्रेरणा मिली। साथ ही बताया कि घर के आस-पास के बच्चे उनके विद्यालयों में आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं के लिए उन्हीं से थर्माकॉल से विभिन्न प्रकार के आइटम बनवाया करते थे। इसी विषय पर कार्य करते हुए उन्होंने मक्का मस्जिद, एक मीनार मस्जिद, जेंट व्हील, 200 फीट लम्बी थर्माकॉल की चेन, रेल इंजन, टाइटेनिक जहाज आदि के नमूने तैयार किये और उनका प्रदर्शन भी किया। उन्होंने उम्मीद जताई कि उनका नाम गिनीस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड एवं लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अवश्य प्रकाशित होगा।

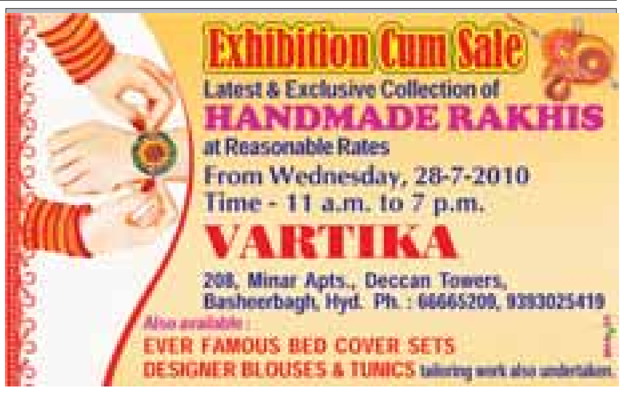

जयश्रीश्याम-श्याम मेरे श्याम का चतुर्थ पड़ाव आज

हैदराबाद, 29 जुलाई-(मिलाप ब्यूरो) जयश्री श्याम - श्याम मेरे श्याम समिति, ग्रेटर हैदराबाद के तत्वावधान में श्रावण मास में आयोजित श्री श्याम भजनांजलि की श्रृंखला एवं श्री श्याम प्रभु की ज्योत का चतुर्थ पड़ाव कल शुक्रवार, 30 जुलाई को रात्रि 8 से 11 बजे तक, गिरिराजशंकर किशोर कुमार काबरा (19-1-912/10/ए, गोल्लाखिड़की, मुरलीनगर, हैदराबाद फोन नं. 24522408, 9963527240 के यहाँ होगा।

समिति के अध्यक्ष विजय तुलस्यान एवं मंत्री कमल बंसल ने एक विज्ञप्ति में यह जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम में समिति के संस्थापक एवं प्रमुख भजन गायक तरुण कुमार झंवर द्वारा भजन प्रस्तुत किये जाएँगे। सहयोगी सह-सहायक श्री हनुमान अग्रवाल एवं विक्रम चंदन होंगे।

कार्यक्रम संयोजक अनिल किशोर अग्रवाल एवं श्री जितेन्द्र गोयल (आर.डी.) ने सभी श्याम प्रेमियों से अनुरोध किया है कि श्रावण मास की ज्योत के दर्शन का सपरिवार लाभ लें।

बालिका शिशु सुरक्षा योजना के तहत आगापुरा की बालिकाओं को प्रोत्साहन राशि प्रदान करते हुए कांग्रेस पार्टी गोशामहल डिवीजन के प्रभारी पुरुषोत्तम राव व पार्षद अनिल सिंह।

प्रमाद व कषायों को तजो : रविरत्न विजयश्री

हैदराबाद, 29 जुलाई-(मिलाप ब्यूरो) श्री तपागच्छ श्वेताम्बर राजस्थानी जैन संघ, श्री शांतिनाथ जैन मन्दिर, कंचर बाज़ार, आराधना भवन, सिकन्दराबाद में चातुर्मासार्थ विराजित प.पू. रविरत्न विजयश्री म.सा. ठाणा 3 ने अपने प्रवचन में संसार को सार एवं असार का भेद करते हुए कहा कि यह संसार जन्म, जाति, जरा एवं मरण आदि दु:ख रुपी व्याधियों से भरपूर है। संसार रूपी समुद्र में चिंतामणी रत्न के समान मनुष्य भव अतिदुर्लभ है। मनुष्य भव में आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल में जन्म, निरोगी शरीर और उसके साथ तीव्र एवं सात्विक वृद्धि, चातुर्य पूर्ण व्यवहार, उसके साथ सच्चे धर्म ज्ञानी गुरु का संयोग मिलना, धर्म को श्रद्धा से सुनना और उसका सत्य रूप में पालन करना अति दुर्लभ है। इसलिये पूज्यश्रीजी कहा कि है बुद्धिशालीजनों, आपको उपलब्ध पवित्र एवं पावन संयोग, जो पूर्व भवों के सत्कर्म से प्राप्त हुआ है, उसे निद्रा, कषाथ, परनिन्दा वगैरह प्रमाद में व्यर्थ न करें। प्रमादवश महान व्यक्तिओं को भी दु:ख का भोग करना पड़ा है। उदाहरण के लिये इतिहास भरा हुआ है। इसलिये दु:ख रूपी कारण प्रमाद एवं कषायों को तज कर सुख रूपी धर्म का पालन करो।

यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, पूज्यश्री ने आगे बताया कि मनुष्य भव दुर्लभ है, अनंत योनियों का भ्रमण कर जीव को अच्छे कर्मों के उदय से मनुष्य भव की प्राप्ति होती है। उसी भव को भ्रमण रहित बनाने के लिये सरल स्वभावी, कपट रहित एवं धर्माचरण होना अति आवश्यक है। केवल मनुष्य भव में जन्म लेना ही सार्थक नहीं होता, अपितु मनुष्यत्व प्राप्ति से आत्मा का कल्याण जरूर हो सकता है। विज्ञप्ति में बताया गया कि 31 जुलाई को कंठाधारणा तप प्रारम्भ हो रहा है। सभी तपस्वी अपना नाम संघ के ऑफिस में पूज्यश्री के पास लिखायें। 30 जुलाई को सुबह 6.30 से सामूहिक भक्तामर स्त्रोत का पठन होगा। सभी धर्मप्रेमी समय पर पधारें। व्याख्यान सुबह 9.15 से यथा समय शुरू होगा। संघ की सदस्या हेतु फार्म ऑफिस में उपलब्ध है। सभी से निवेदन है कि फार्म यथाशीघ्र भरकर जमा कराये। अधिक जानकारी हेतु मुकनचन्द देवडा धोका से फोन नं. 9346291918 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

रामायण तुलसी सम्मान के लिए संस्तुतियाँ आमंत्रित

हैदराबाद, 29 जुलाई-(मिलाप ब्यूरो) प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी गोस्वामी तुलसीदासजी की जयंती के अवसर पर सावन शुक्ल पक्ष पर दिये जाने वाले रामायण तुलसी सम्मान के लिए संस्तुतियाँ आमंत्रित की गई है। यह संस्तुतियाँ आगामी 7 अगस्त तक पहुँच जानी चाहिए। सम्मान के तहत शॉल, श्रीफल, तुलसी साहित्य का सेट, गोस्वामीजी के स्मृति-चिह्न स्वरूप उनकी फोटो एवं 9 राम मुद्रिकाएँ दी जाती हैं।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, सम्मान की चयन समिति में डॉ. राधेश्याम शुक्ल, डॉ. ऋषभ देव शर्मा तथा तेजराज जैन है। अधिक जानकारी के लिए फोन नं. 040-65796067 पर संपर्क कर सकते हैं।
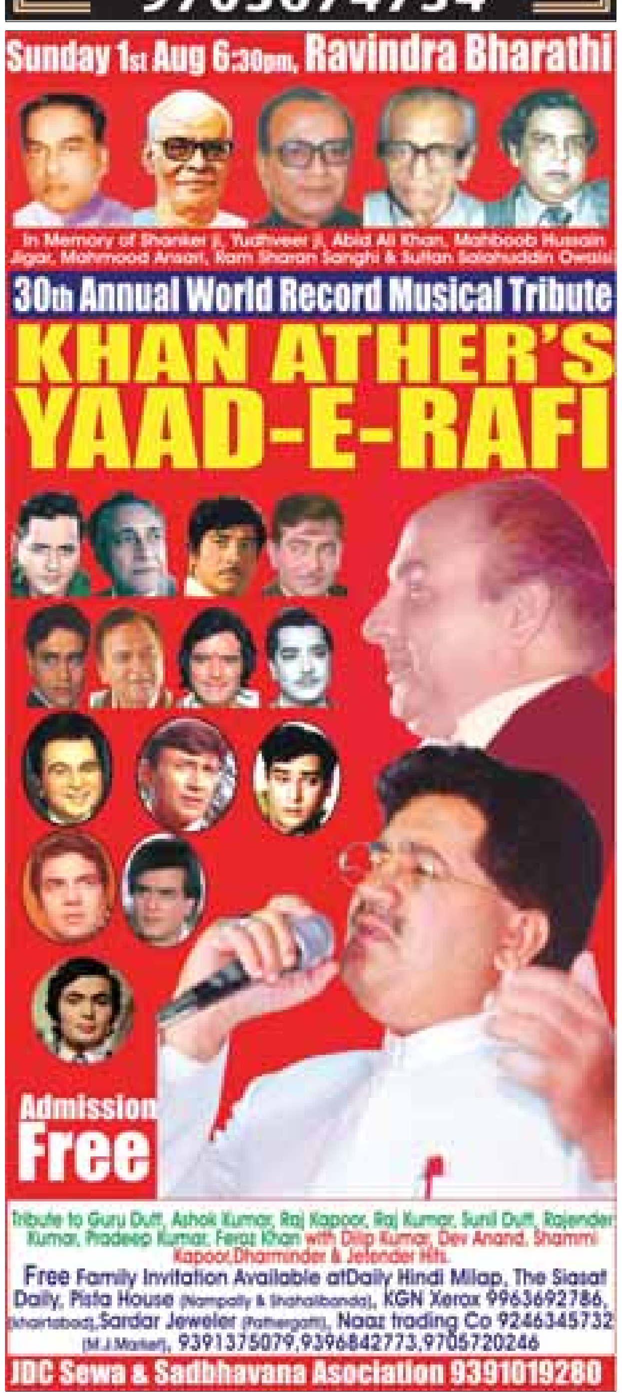
सम्मान के प्रायोजक रामचरित मानस संस्थान है। अध्यक्ष तेजराज जैन, न्यासी पुरुषोत्तम ज्ञानवति तुलस्यान, ओमप्रकाश अग्रवाल, लक्ष्मीनारायण सूँठवाल, बद्रीनारायण तिवारी एवं रोशनलाल तिवारी है। सम्मान समारोह तुलसी जयंती के दिन आगामी 16 अगस्त को प्रदान किया जाएगा।